ISSN NO.2395-0692

IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

वर्तमान भारत में शिक्षा के पुनर्निमाण में प्रयोजनवाद या अर्थ– क्रियावाद एक उचित आधार प्रदान करती है

प्रदीप कुमार वर्मा

असि0 प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, सीताराम समर्पण महाविद्यालय, नरैनी (बाँदा), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध, उ0प्र0

प्रयोजनवाद सत्य का मापदण्ड ह। यह वह सिद्धांत है जो विचार–प्रक्रिया के साथ सत्य की जॉच करके उसके व्यावहारिक परिणामों से करता है। प्रयोजनवाद पूर्व–सिद्ध को स्वीकार नही करता है।

प्रयोजनवाद के विभिन्न पर्याय हैं, जिन्हे व्यावहारवाद, अनुभववाद, पुनर्रचनावाद ,फलवाद, प्रयोगवाद आदि की संज्ञाए दी गई हैं। इस द" ान में एक ओर आद" ावादियों द्वारा प्रतिपादित पूर्व–सिद्ध सत्य के विरूद्ध आवाज उठाई है तो दूसरी ओर प्रकृतिवाद के अमानवीय वैज्ञानिक सत्य का विरोध किया है। प्रयोजनवाद इन दोनो वादों को चुनौती देते हुए अनेक नवीन विचारों को संकलन किया है, जिनमें नकारात्मक विचारों की तस्वीर झलकती है तथा पूर्व–सिद्ध सभी सत्यों को स्वीकार न करने की प्रवृत्ति का अवलोकन किया गया है।

जॉन ड्यूवी को प्रयोजनवाद का महान प्रतिपादक माना जाता है। जिसनें शिक्षा में नई क्रांति को जन्म दिया है। इनके अनुसार '' *ज्ञान एवं मस्तिश्क साधन हैं न कि साध्य*।''

प्रयोजनवाद भाब्द का अभिप्राय–व्यावहारिकता और उपयोगिता का दर्शन है जिसके आधार पर संकल्पों की सत्यता के निर्माण वस्तुओं और तथ्यों के व्यावहारिक परिणामों के आधार पर होता है।

जेम्स ने अपने कथन में कहा है कि '' प्रयोजनवाद मस्तिश्क का स्वभाव व मनोवृत्ति है यह विचारों की प्रकृति एवं सत्य और वास्तविकता का सिद्धांत है।''

प्रैट– ''प्रयोजनवाद हमें अर्थ का सिद्धांत, सत्य का सिद्धांत, ज्ञान का सिद्धांत और वास्तविकता का सिद्धांत देता है।''

प्रयोजनवाद के सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

1. जगत में लगातार बदलाव हो रहे हैं। इसमें कुछ भी स्थिर नही है सब बदलाव की दशा में हैं।
2. जगत अपूर्ण है और वह आज भी निर्माण की दशा में है।
3. जगत का कोई भी अंतिम तत्व नही है वरन् विभिन्न तत्वों से मिलकर बना है।
4. इस जगत के पीछे कोई भी अनुभवातीत सत्ता नही है।
5. मनुश्य भी परिवर्तन है तथा इस दुनिया के साथ उसका भी विकास होता रहता है।
6. यह वाद वर्तमान तथा भविश्य में आस्था रखता है।
7. प्रयोजनवाद क्रिया तथा मानव भाक्ति को महत्व देता है।

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम के सम्बंध में प्रयोजनवाद की निम्नलिखित मान्यताए हैं–

1– पाठ्यक्रम का निर्माण की प्रकृति और आव" यकता के अनुसार होना चाहिए जो बालकों की रूचि के आधार पर किया जाए। इसलिए वही क्रियाएं पाठ्यक्रम का हस्सा होनी चाहिए।

2– पाठ्यक्रम उपयोगी होन चाहिए। ज्ञान वह वस्तु है जिसका अर्जन काम से होता है ज्ञान की कसौटी समस्या का निवारण है। ज्ञान जब किसी समस्या को हल करने में सर्मथ होता है, तभी वह सच्चा है अन्यथा वह केवल मात्र सूचना है।

3– पाठ्यक्रम ऐसा हो जो बालक का सर्वांगीण विकास(भाारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं धार्मिक आदि गुणों का विकास करे।

इस प्रकार उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर हम ये कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम में अधोलिखित विषेशताएं होनी चाहिए–

- ❖क्रियाशीलता
- ❖उपयोगी
- ❖लचीलापन
- ❖स्वतंत्रता
- ❖संतुश्टि

प्रयोजनवाद और बालक

प्रकृतिवादी बालक को जीवित प्राणी मानते हैं जबकि आद" ार्वादी उसे एक आत्मिक प्राणी। प्रयोजनवादी उसे एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा देते हैं। वे बालक के भाारीरिक, मनोवैज्ञानिक, और सामाजिक पक्ष पर बल देते हैं।

प्रयोजनवाद और शिक्षक

प्रयोजनवादी बालकों को सूचनाएं नही देना चाहते कैं वे चाहते हैं कि बालक स्वयं ज्ञान की खोज करे। विद्यालय में उनको ज्ञान के लिए अवसर दिये जाने चाहिए। उनकी शिक्षा–योजना में शिक्षक का स्थान पथ–प्रदर्शक, सलाहकार का होना चाहिए।

प्रयोजनवाद और अनुशासन

प्रयोजनवादी अनु" ाासन की स्थापना के लिए बालक की रूचियों तथा क्रियाओं को महत्व देते हैं। उनके अनुसार ये क्रियाएं सामाजिक तथा सहयोग के आधार पर की जानी चाहिए। इस प्रकार बालकों में आत्मानु" ाासन बढ़ता है। इससे उनका नैतिक तथा चारित्रिक प्रशिक्षण होता है।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

प्रयोजनवाद और विद्यालय

प्रयोजनवादी विद्यालय को एक लघु सामाजिक संस्था मानते हैं। ड्यूवी के के अनुसार–विद्यालय समाज का वास्तविक प्रतिनिधि होना चाहिए। विद्यालय समाज की आवश्यकतानुसार ज्ञान प्रदान करता है तथा उनके रचनात्मक प्रवृत्तियों का विकास करता है।

वर्तमान शिक्षा पर प्रयोजनवाद का प्रभाव

वर्तमान शिक्षा पर प्रयोजनवाद का प्रभाव निम्नलिखित है–

- वर्तमान में बालक को शिक्षा उनकी रूचियों के अनुसार दी जाती है
  पाठ्यक्रम का स्वरूप भी बालकों की रूचियों को ध्यान में रखकर निर्धारित करने के पक्ष में है।
- प्रयोजनवादी शिक्षा के माध्यम से बालक में जनतांत्रिक मूल्यों के विकास पर बल देते हैं।
- अब बालकों के अनुभव के आधार पर शिक्षा देना अच्छा समझा जाता है।
- शिक्षा के उद्देश्य तथा पाठ्यक्रम पर नवीन दृश्टिकोण से विचार होने लगाा है।
- प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा को नया अर्थ प्रदान किया गसा है।
- इस दर्शन के अनुसार बालक के अनुभव के आधार पर शिक्षा देना अच्छा समझा जाने लगा है।
- अब विद्यालय में ऐसी शिक्षा पर बल दिया जाता है जो बालकों में सामाजिक भावना का विकास करे।
- इस दर्शन की एक महत्वपूर्ण शिक्षण विधि योजना विधि है।

निश्कर्श

प्रयोजनवादी की आलोचना भी हुई फिर भी उसकी प्रसंशा करते हुए रस्क ने लिखा है कि– प्रयोजनवाद नवीन आद" ावाद के विकास में एक चरण मात्र है। यह नवीन आद" ावाद ऐसा होगा जो सदैव जीवन की वास्तविकता को ध्यान रखेगा और व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की समन्वय करेगा। इसके साथ ही यह ऐसी संस्कृति को निर्माण करेगा जो कु" ालता पुश्प होगी। आज के युग में प्रयोजनवाद का f" ाक्षा पर जितना वि" वव्यापी प्रभाव पड़ता है उतना किसी अन्य दर्शन का नही।

सन्दर्भ सूची :–

i. लाल,रमन बिहारी,शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार(2012),रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी गंगोत्री रोड़,मेरठ–250002।
ii. डा0 रामशकल पाण्डेय व ममता चतुर्वेदी (2014),उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
iii. प्रो0 एस0 पी0 रूहेला(2010), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।